विस्तृत प्रतिवेदन
भारत का अमृत महोत्सव
“स्वतंत्रता प्राप्ति पश्चात वन वर्धन हेतु वैज्ञानिक तकनीकी का विकास”
दिनांक : 15.07.2021

वन उत्पादकता संस्थान
(भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद)
e-mail – dir_ifp@icfre.org, ifpranchi2018@gmail.com

प्रधानमंत्री के आजादी का अमृत महोत्सव आह्वान के आलोक में केंद्र सरकार एवं भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून के निर्देश पर संस्थान के निदेशक डा. नितिन कुलकर्णी के सक्रिय निर्देशन एवं डा. योगेश्वर मिश्रा के मार्गदर्शन में दिनांक 15.07.2021 को वन उत्पादकता संस्थान, रांची द्वारा "स्वतंत्रता प्राप्ति पश्चात वन वर्धन हेतु वैज्ञानिक तकनीकी का विकास" विषय पर आभासीय मंच द्वारा संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसके मुख्य आकर्षण डा. वी.एम.ईलोरकर रहे तथा लगभग 50 प्रतिभागियों ने संगोष्ठी में भाग लिया।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए संस्थान के वैज्ञानिक श्रीमती रुबी सुसाना कुजुर ने प्रतिभागियों, अतिथियों तथा मेजबानों का स्वागत किया एवं कार्यक्रम का परिचय दिया। डा. योगेश्वर मिश्रा, ने कार्यक्रम की आवश्यकता की चर्चा करते हुए बताया कि आम जनों तक आजादी के महत्व को पहुंचाने के लिए प्रधानमंत्री का यह कार्यक्रम हमारे पूर्व एवं वर्तमान के विकास का आंकलन करने का मौका देता है। वन–वर्धन में वैज्ञानिक तकनीकी का विकास की चर्चा करते हुए उन्होने बताया कि काष्ठ एवं अकाष्ठ

उत्पादों की गुणवत्ता बढ़ाने, वनवर्धन करने, वनों का सर्वेक्षण करने, बीज संग्रहण, अनुवांशिकी सुधार आदि के क्षेत्रों में वैज्ञानिक तकनीकी का काफी विकास हुआ है।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि एवं प्रस्तुतकर्ता डा. वी.एम.इलोरकर, प्रधान वैज्ञानिक, कृषि विश्वविद्यालय, पंजाबराव देशमुख कृषि विद्यापीठ, नागपुर ने कृषि वानिकी में सागवान एवं चंदन की खेती के विषय में विस्तृत प्रस्तुती दी। उन्होने विश्वविद्यालय द्वारा चलाए गए कृषि वानिकी गतिविधियों का नमूना प्रस्तुत करते हुए उसकी सफलता/असफलता को बताया। इस दिशा में विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित पुस्तकों की भी चर्चा की। उन्होने वन–वर्धन के उद्देश्यों यथा प्रति इकाई अधिक उत्पादन, उत्तम गुणवत्ता, आर्थिक मूल्य वर्धित प्रजाति, खाली क्षेत्रों का वानकीकरण आदि को विस्तार से समझाया। कृषि वानिकी के लाभ, काष्ठ आधारित उद्योगों, कारखानों द्वारा काष्ठ की मांग एवं उपलब्धता आदि का आंकड़ा प्रस्तुत किया। उन्होने बताया कि लगभग 23% काष्ठ भारत में आयात किया जाता है। कृषि वानिकी में लाभकारी वृक्ष प्रजाति, बीज संग्रहण, SSO, CSO, SPA आदि की चर्चा करते आस्ट्रेलिया द्वारा भारतीय प्रजाति के चंदन वनरोपण को भी उद्धृत किया तथा पौधोरोपण प्रबंधन को विस्तार से बताया।

अपनी अध्यक्षीय उद्बोधन में निदेशक डा. नितिन कुलकर्णी ने आजादी को यादगार के बहाने अपने–अपने क्षेत्र में विकास का मूल्यांकन इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य बताया। वैज्ञानिक पद्धति द्वारा कृषि वानिकी को वन–वर्धन एवं जीविकोपार्जन का एक माध्यम बताते हुए उन्होने आजादी के बाद वैज्ञानिक तकनीकी विकास का विस्तार से चर्चा की एवं डा. वी.एम.इलोरकर के प्रस्तुती की सराहना की। इसी क्रम में उन्होने seed ball technology की भी चर्चा की।

अंत में श्रीमती रुबी सुसाना कुजूर द्वारा सभी के धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यक्रम समाप्ति की घोषणा की। कार्यक्रम को सफल बनाने में विस्तार प्रभाग, सूचना एवं तकनीकी प्रभाग का योगदान सराहनीय रहा।

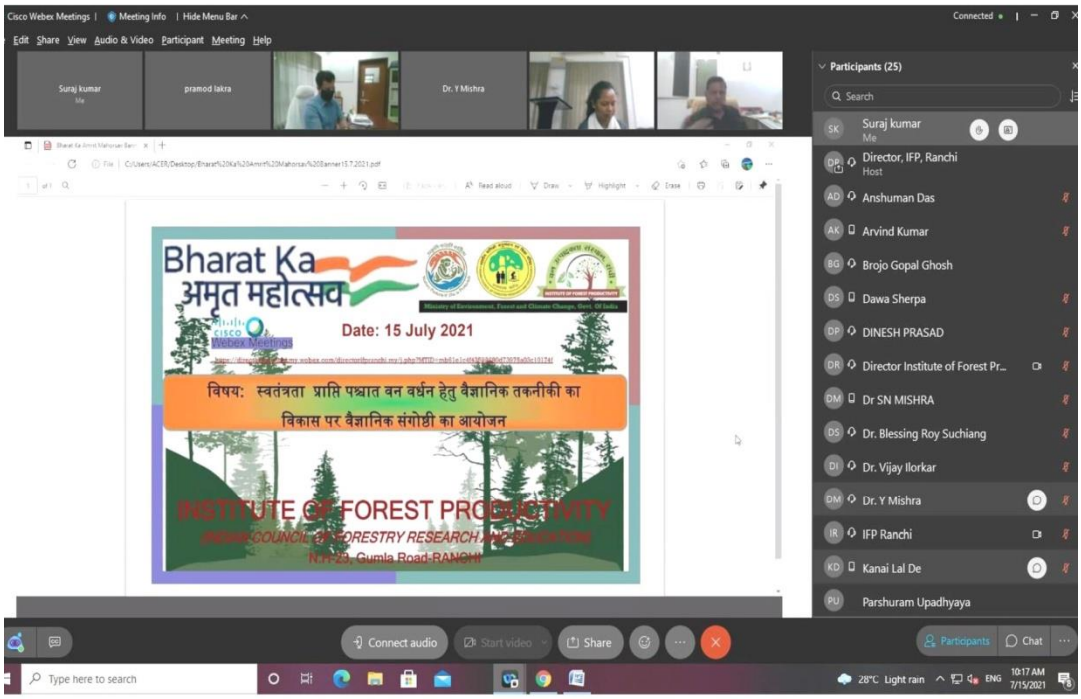

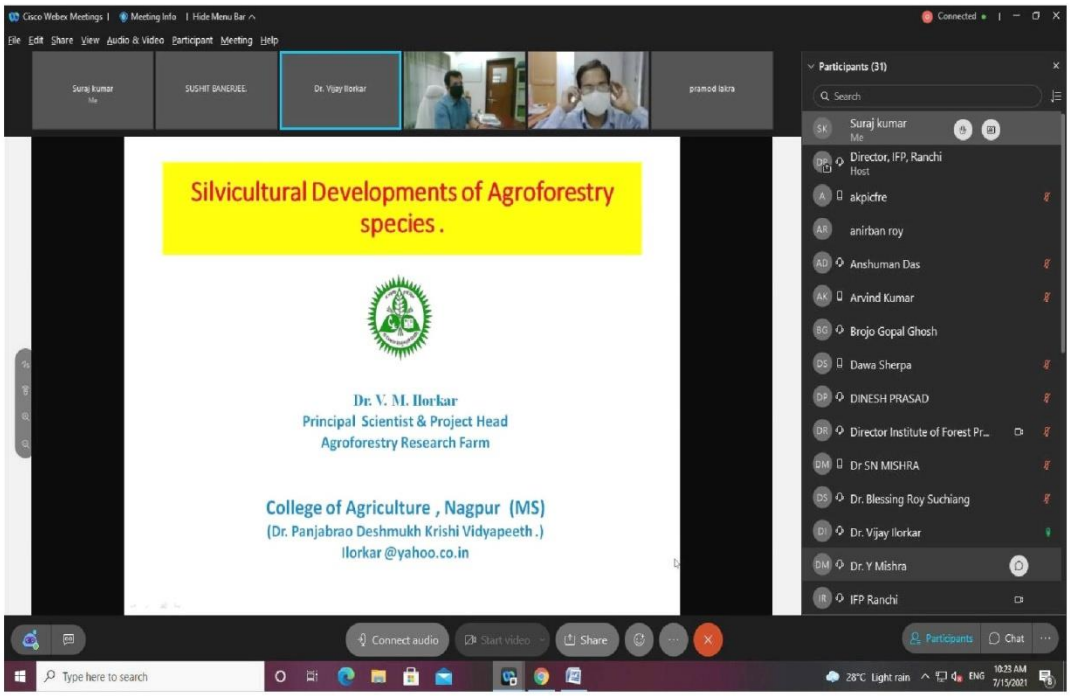

अमृत महोत्सव कार्यक्रम की झलकियां

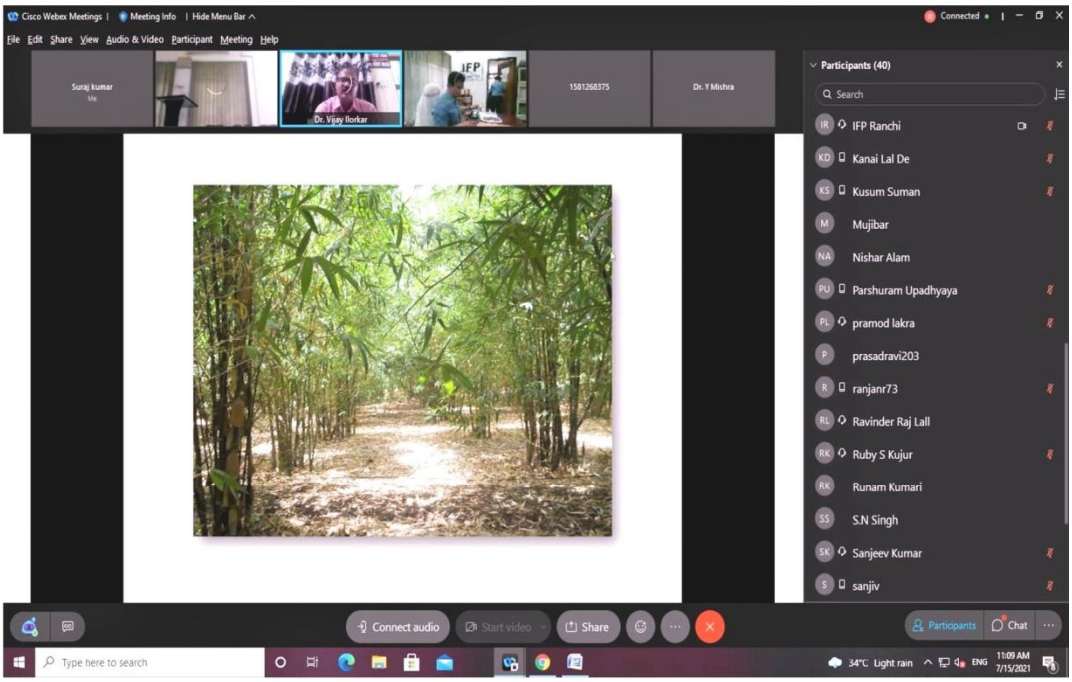

अमृत महोत्सव कार्यक्रम की झलकियां

अमृत महोत्सव कार्यक्रम की झलकियां

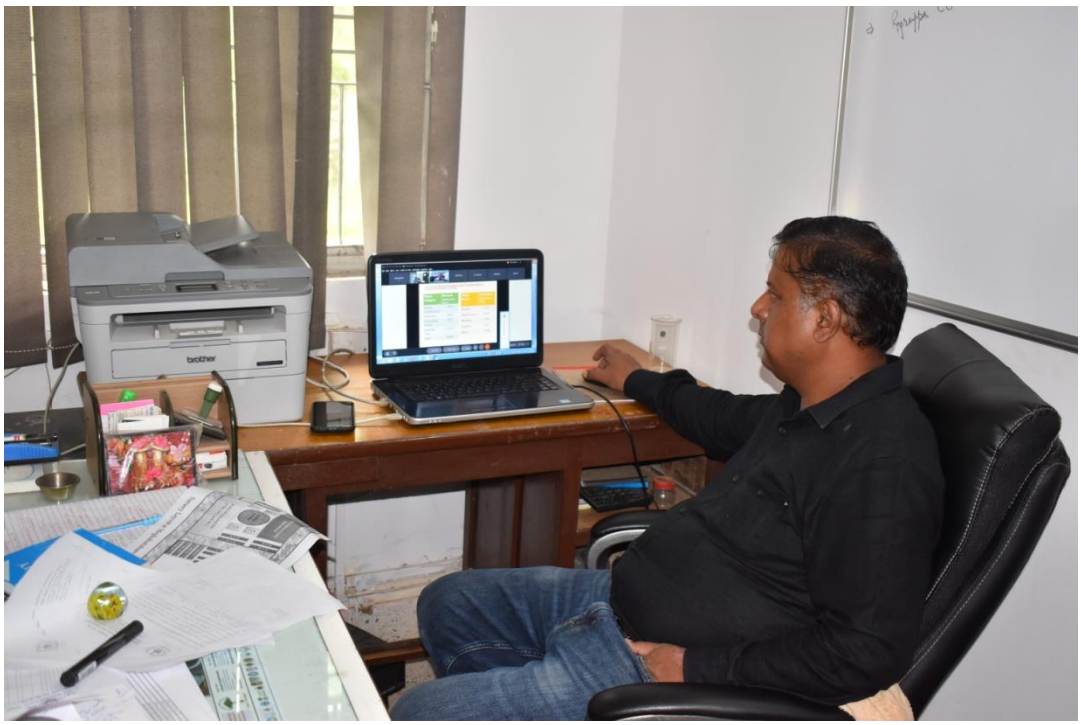

अमृत महोत्सव कार्यक्रम की झलकियां

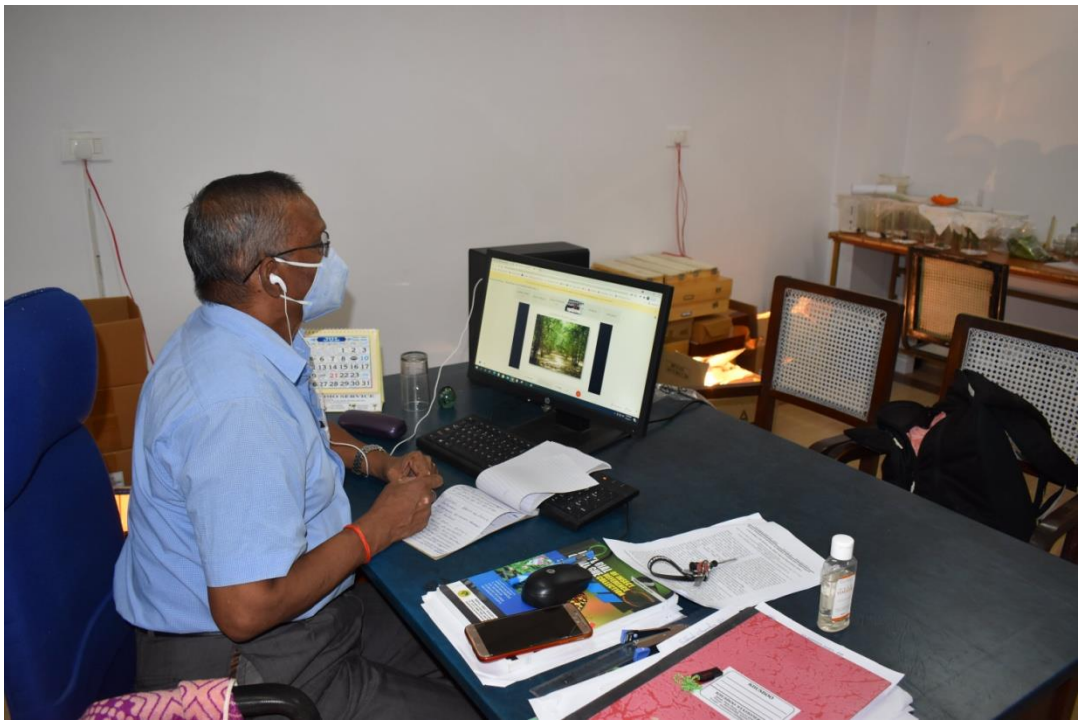

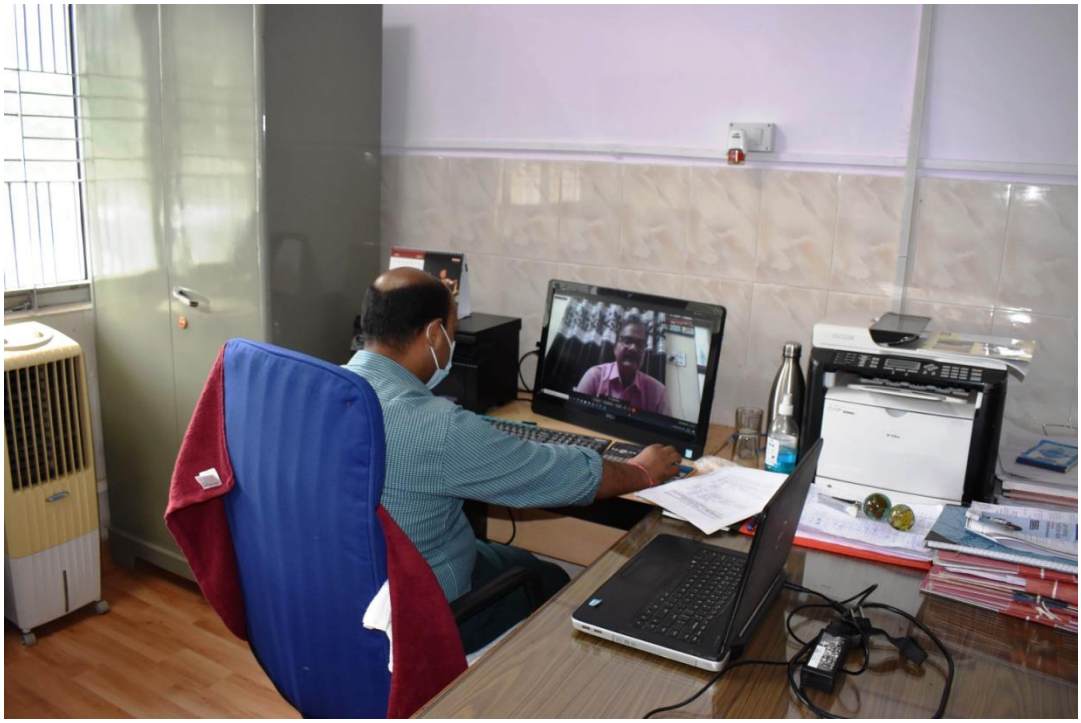

अमृत महोत्सव कार्यक्रम की झलकियां

अमृत महोत्सव कार्यक्रम की झलकियां

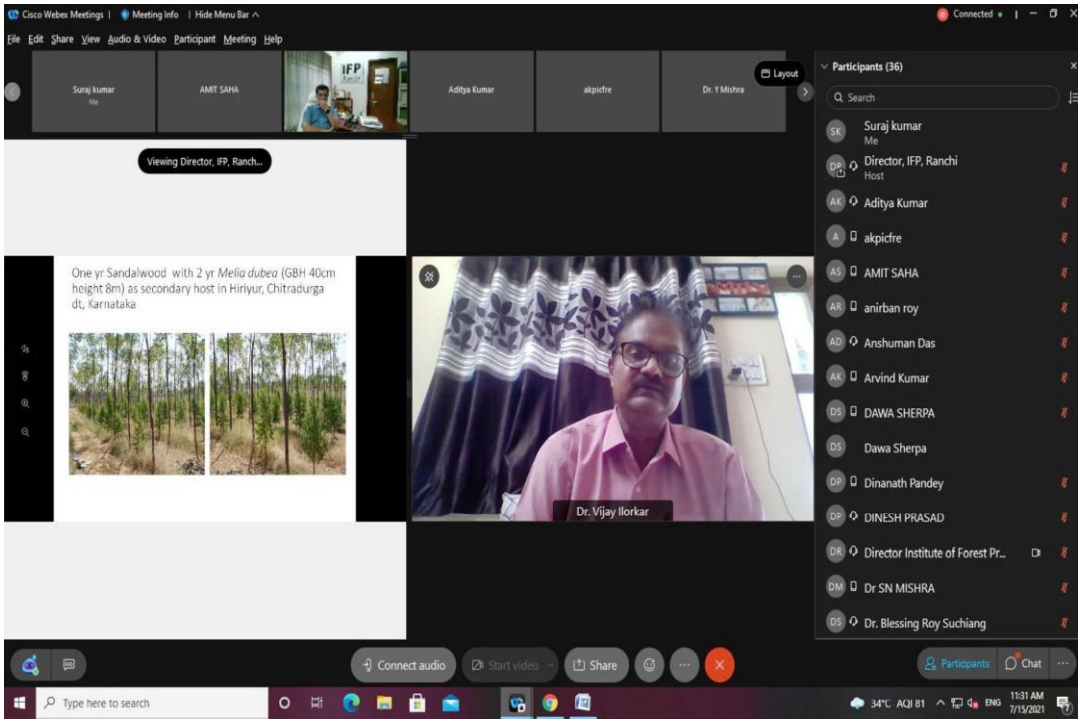

अमृत महोत्सव कार्यक्रम की झलकियां

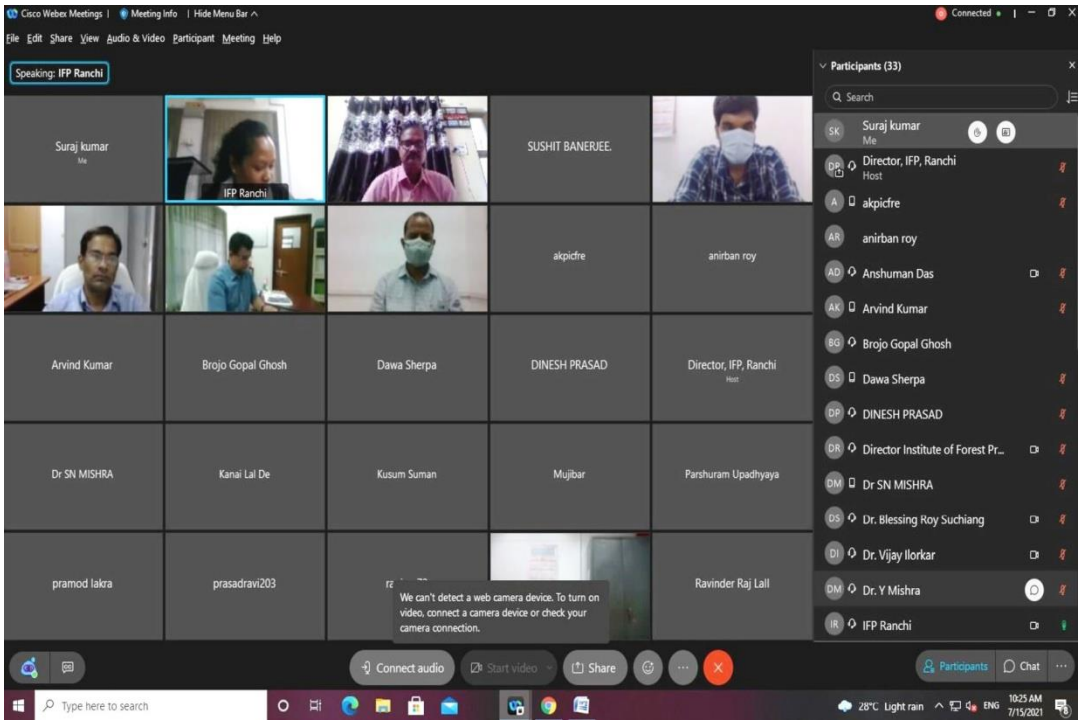

अमृत महोत्सव कार्यक्रम की झलकियां

अमृत महोत्सव कार्यक्रम की झलकियां

अमृत महोत्सव कार्यक्रम की झलकियां

अमृत महोत्सव कार्यक्रम की झलकियां

अमृत महोत्सव कार्यक्रम की झलकियां